COP-16 सम्मेलन

चर्चा में क्यों?

हाल ही में **हरियाणा के पर्यावरण, वन और वन्यजीव मंत्री ने** 2 से 13 दिसंबर, 2024 तक **सऊदी अरब के रियाद** में **मरुस्थलीकरण से निपटने के लिये संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (UNCCD)- COP 16** में भाग लेने के लिये नई दिल्ली से एक प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया।

मुख्य बिंदु

- **सहयोग के लिये मंच:**
  - **यह आयोजन ग्रीन जोन के व्यवसायों,** वैज्ञानिकों, वित्तीय संस्थानों, **गैर-सरकारी संगठनों (NGO)** और प्रभावित समुदायों के लिये एक प्रभावी मंच के रूप में कार्य करेगा।
  - इसका उद्देश्य **भूमि पुनर्स्थापन और सूखा प्रबंधन** के लिये सहयोग को सुविधाजनक बनाना और स्थायी समाधान विकसित करना है।
- **अंतर्राष्ट्रीय भागीदारी:**
  - COP-16 में विश्व भर के विभिन्न देशों के प्रतिनिधि एक साथ आएँगे।
  - इस सम्मेलन के माध्यम से मरुस्थलीकरण से संबंधित चुनौतियों के समाधान पर वैश्विक स्तर पर चर्चा को प्रोत्साहन मिलने की संभावना है।

मरुस्थलीकरण से निपटने के लिये संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (UNCCD)

- **वर्ष 1994 में स्थापित,** यह पर्यावरण और विकास को सतत् भूमि प्रबंधन से जोड़ने वाला एकमात्र **कानूनी रूप से बाध्यकारी अंतर्राष्ट्रीय समझौता है।**
- यह विशेष रूप से शुष्क, अर्द्ध-शुष्क और शुष्क उप-आर्द्र क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करता है, जिन्हें शुष्क भूमि के रूप में जाना जाता है, जहाँ कुछ सबसे कमज़ोर पारिस्थितिकी तंत्र और लोग पाए जा सकते हैं।
- सम्मेलन के 197 पक्ष **शुष्क भूमि पर लोगों के जीवन स्तर को बेहतर बनाने,** भूमि और मृदा की उत्पादकता को बनाए रखने और बहाल करने तथा सूखे के प्रभावों को कम करने के लिये मिलकर काम करते हैं।
- UNCCD भूमि, जलवायु और जैव विविधता की परस्पर जुड़ी चुनौतियों से निपटने के लिये अन्य दो रियो सम्मेलनों के साथ काम करता है:
- **जैव विविधता पर कन्वेंशन (CBD)**
- **जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन (UNFCCC)**

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/cop-16-conference